दैनिक जागरण, भोपाल

17 JUN 2011

प्रसंगवश / शाहरोज आफरीदी

नाट्य विद्यालय का आगाज, सार्थक पहल

रंगमंच दर्शकों से जीवंत संवाद का सबसे पुराना और सशक्त माध्यम है। पाश्चात्य देशों में ही नहीं, भारत में भी रंगमंच के जरिये सामाजिक बदलाव की सार्थक कोशिशें हुई हैं लेकिन बाजार की ताकत के बल पर चली सिनेमा तथा टीवी कार्यक्रमों की आंधी ने नाट्यकला को काफी प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। भोपाल में स्थापित होने जा रहा नाट्य विद्यालय इस सांस्कृतिक विधा के लिए संजीवनी की भूमिका अदा करेगा और रंगमंच की चेतना से समाज को समृद्ध करेगा, यह उम्मीद हम सभी को है। प्रदेश सरकार ने राज्य नाट्य विद्यालय की स्थापना कर अपनी सांस्कृतिक प्रतिबद्धता का परिचय दिया है। खास तौर पर इस नाट्य विद्यालय के स्वरूप और पाठ्यक्रम में प्रदेश की लोक कलाओं और परंपराओं को शामिल करना सांस्कृतिक क्षरण को रोकने की दिशा में सकारात्मक पहल साबित हो सकती है। पाठ्यक्रम में भरतमुनि के नाट्य शास्त्र से लेकर आधुनिक युग के नाटक और पाश्चात्य नाट्य कला तथा उसका इतिहास और अंततः टीवी इंडस्ट्री में सफल होने के गुर शामिल हैं। इस तरह नाट्य विद्यालय की पाठ्यक्रम परामर्शदात्री समिति ने ऐसे विद्यार्थी गढ़ने की कोशिश की है जिन्हें अपनी मिट्टी से जुड़े रहने के साथ-साथ जीविकोपार्जन के लिए ज्यादा संघर्ष न करना पड़े। इस प्रकार से लोक कलाओं तथा प्राचीन नाट्य शास्त्र को जिंदा रखा जा सकता है। यही नहीं प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा नाट्य विद्यालय के लिए चयनित छात्रों के लिए पांच हजार रुपए प्रति माह छात्रवृत्ति का प्रावधान करना भी प्रदेश सरकार की अनूठी पहल है। इससे इंगित होता है कि ड्रामा स्कूल को डिजायन करने वाले जमीनी हकीकत से अच्छी तरह वाकिफ हैं। उन्हें इस बात का अहसास है कि 'नाटक-नौटंकी' की पढ़ाई के लिए घर वालों से पैसे निकलवाना कितना कठिन काम है।

> **नाट्य विद्यालय की पाठ्यक्रम परामर्शदात्री समिति ने ऐसे विद्यार्थी गढ़ने की कोशिश की है जिन्हें अपनी मिट्टी से जुड़े रहने के साथ-साथ जीविकोपार्जन के लिए ज्यादा संघर्ष न करना पड़े।**

नाट्य विद्यालय के छात्रों को लोक कलाओं और लोक-परंपराओं से सीधे रूबरू कराने के लिए इस विद्यालय को 'स्कूल ऑन व्हील्स' की तर्ज पर शुरू करना भी अपने आपमें अभिनव प्रयोग होगा। गौरतलब है कि देश के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय सहित अन्य ड्रामा स्कूल भी अपनी चार दीवारियों तक ही सीमित हैं। ऐसा पहली बार होगा जब कोई स्कूल अपनी चौहद्दी से बाहर निकल वास्तविक कलाकारों के साथ उन्हीं के माहौल में उन्हीं के बीच उनकी कला को समझने और सीखने का प्रयास करेगा। मध्यप्रदेश यूं भी सांस्कृतिक रूप से काफी समृद्ध है। प्रदेश के विभिन्न सांस्कृतिक अंचलों में पहुंचकर वहां की संस्कृति को समझना नाट्य विद्यालय के छात्रों के व्यक्तित्व को बहुमुंखी भी बनाएगा। तेजी से बदलते माहौल में जब बाजार आदिवासियों की संस्कृति को भी प्रभावित कर रहा हो, तो अपनी पारंपरिक संस्कृति का सरंक्षण करना और भी आवश्यक हो जाता है। इस नाट्य विद्यालय के माध्यम से यह कार्य भी सुगम हो जाएगा।

इतनी यथार्थवादी योजनाओं के साथ राज्य नाट्य विद्यालय का शुरू होना अपने आपमें शुभ संकेत देता है। बस ध्यान इस बात का रखना होगा कि यह स्कूल भी सरकार के अन्य संस्थानों की तरह 'सरकारी' ढर्रे पर न चल निकले। अभी तो ड्रामा स्कूल की सिर्फ शुरुआत हुई है, असली चुनौतियां तो अब सामने आएंगी। ध्यान रखना होगा कि स्कूल से 'प्रदेश का रंग' न उतरने पाए। ऐसा होने की दिशा में वह अपनी वास्तविक पहचान खो सकता है। सबसे बड़ी चुनौती तो इसे राष्ट्रीय पटल पर स्थापित करने की है। फैकल्टी चयन के समय अगर सावधानी न बरती गई तो सब किए धरे पर पानी फिर सकता है। यही नहीं आने वाले समय में नाट्य विद्यालय को इस मुकाम पर पहुंचाना होगा जहां संबद्धता कोई मायने न रखती हो अथवा किसी प्रतिष्ठित संस्थान या विश्वविद्यालय से संबद्ध करवाना होगा। नहीं तो इन विद्यार्थियों को मिलने वाला डिप्लोमा कागज का एक बेकार टुकड़ा बनकर रह जाएगा।